पौष-चैत्र, वि.सं. २०८०
अप्रैल-जून, 2024

ISSN : 0378-391X
भाग-85, अंक: 2
यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

शताब्दी की ओर

रामधारी सिंह 'दिनकर' विशेषांक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

भाग–85, अंक–2
अप्रैल–जून, 2024
पौष–चैत्र, वि. संवत् २०८१

यू.जी.सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित
ISSN : 0378-391X

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
12 डी, कमला नेहरू रोड, प्रयागराज–211001 (उ.प्र.)
दूरभाष : 0532-2407625

website : www.hindustaniacademyup.org.in
email : hindustaniacademyup@gmail.com

समस्त भुगतान हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज के नाम मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

शुल्क : **एक प्रति ₹ 50.00, वार्षिक : ₹ 200.00**
विशेषांक : ₹ 100.00

मुद्रक : **आस्था पेपर कन्वर्टर, प्रयागराज**

प्रकाशित रचनाओं से हिन्दुस्तानी एकेडेमी या सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।

अनुक्रम

■ **सम्पादकीय** ... 5

■ **आलेख**

- दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय-जागरण – सभापति मिश्र 7
- 'कुरुक्षेत्र' : राष्ट्रकवि दिनकर की युद्ध और शांति संबंधी वैचारिकी – सुनीता रानी घोष 13
- रामधारी सिंह दिनकर और उनका क्रांतिधर्मी काव्य – सुरेन्द्र प्रताप 17
- संस्कृति के चार अध्याय-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की मुखर अभिव्यक्ति – एम0 पी0 सिंह 20
- रामधारी सिंह 'दिनकर' और उनकी 'परशुराम की प्रतीक्षा' – इन्द्रमणि कुमार 26
- दिनकर और टैगोर की कविताओं में भारतबोध – राजेश कुमार गर्ग 32
- परिवर्तनकामी चेतना के कवि दिनकर – चित्तरंजन मिश्र 36
- कामअध्यात्म और दिनकर की ऊर्वशी – इंदीवर 41
- बाल-काव्य और राष्ट्रकवि दिनकर – भगवती प्रसाद द्विवेदी 48
- 'दिनकर' के संस्मरणों और यात्रा साहित्य में संस्कृतियों का समावेश –कमल कुमार 51
- दिनकर की काव्य संबंधी मान्यताएँ : मिटटी की ओर – हरदीप सिंह 57
- परशुराम की प्रतीक्षा में इतिहास और वर्तमान – श्रीकांत द्विवेदी 61
- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता रामधारी सिंह 'दिनकर' – प्रतीची मालवीय 66
- रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना – प्रीति सिंह 70
- दिनकर में राष्ट्रीय नवोत्थान का स्वर – मुरारजी त्रिपाठी 74
- दिनकर के साहित्य में कला, संस्कृति और सद्भाव – जूही शुक्ला 77
- 'रेती के फूल' : वैयक्तिक अभिव्यक्ति एक समीक्षात्मक अध्ययन – मोनिका चौहान 82
- सांस्कृतिक अंतर्विरोध और समरसता : संसदीय लोकतंत्र पर रामधारी सिंह दिनकर के विचारों का पुनरवलोकन – चन्द्रजीत सिंह यादव 85
- सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत कवि रामधारी सिंह दिनकर – चंद्रकांत सिंह 90
- राष्ट्र निर्माण में दिनकर जी का काव्य – नीलम सिंह 94
- परशुराम की प्रतीक्षा' में व्यक्त रामधारी सिंह 'दिनकर' की राष्ट्रीय चेतना – मधुकर राय 98
- रामधारी सिंह दिनकर का काव्य उर्वशी : एक मूल्यांकन – अनिल कुमार सिंह 102
- नारी भीतर नारी – विशेष संदर्भ : उर्वशी – अनूप कुमार 107
- दिनकर के गद्य साहित्य में सांस्कृतिक चेतना के ओजस्वी स्वर – नीलाक्षी जोशी 110
- उर्वशी में प्रेम का स्वरूप एवं मनोवैज्ञानिक प्रतीकात्मकता – सलमा खातुन 114
- रामधारी सिंह 'दिनकर' के रचना-संसार का वैशिष्ट्य – नन्दराम 118
- अप्रतिम व्यक्तित्व : दिनकर –विवेक सत्यांशु 123
- सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक कवि रामधारी दिनकर – शिवनाथ मिश्र 126
- दिनकर की 'उर्वशी' : मिथकीय संचेतना, प्रतिपाद्य एवं जीवन-दर्शन – रुचि बाजपेई 131
- दिनकर की काव्य सर्जना में राष्ट्रीयता और जनाधिकार का महाराग – संदीप कुमार मिश्र 137
- रामधारी सिंह 'दिनकर' का यात्रा साहित्य : एक अनुशीलन – गुँजा आनंद 140

रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

प्रीति सिंह

राष्ट्रीय भावनाओं के ओजस्वी कवि रामधारी सिंह दिनकर ने साहित्य के लिए एक ऐसी पृष्ठभूमि निर्मित की है, जो राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत थी। दिनकर जी ने अपनी समर्थ लेखनी से गद्य-पद्य दोनों में रचनाएँ कर समाज को एक समृद्ध साहित्य प्रदान किया। दिनकर के काव्य को सभी समर्थ आलोचकों ने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्य धारा के संदर्भ में देखा है और दिनकर को राष्ट्रीय धारा का प्रमुख कवि स्वीकार किया है। कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, रेणुका, हुंकार जैसे काव्य में राष्ट्रीय चेतना का भाव मुखर होकर परिलक्षित होता है। दिनकर लिखते हैं-

"कोई मुझे बता दे, क्या आज हो रहा है,
मुँह को छिपा तिमिर में क्यों तेज रो रहा है?
दाता, पुकार मेरी, संदीप्ति को जिला दे,
बुझती हुई शिखा की संजीविनी पिला दे।
प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ।
चढ़ती जवानियों का श्रृंगार माँगता हूँ।"

समन्वय का सुन्दर स्वरूप जो हमें दिनकर के सम्पूर्ण साहित्य में दिखाई पड़ता है वह अन्यत्र दुलर्भ है। दिनकर लिखते हैं- "भारत को आधुनिक भी बनना है और उसे अपनी परम्परा के श्रेष्ठ अंश को भी बचाकर रखना है।"[2]

दिनकर के काव्य में जहाँ एक ओर राष्ट्रीय चेतना प्रबल रूप में विद्यमान है वहीं दूसरी ओर मानवीय चेतना का सशक्त स्वरूप परिलक्षित होता है। 'रश्मिरथी' में दिनकर ने मानवीय संवेदनाओं के साथ उदात्त गुणों का वर्णन भी किया है। इसमें नैतिकता, विश्वसनीयता द्वारा अद्भुत धरातल का निर्माण किया जाता है। दिनकर ने रश्मिरथी' में सभी सामाजिक पारिवारिक सम्बन्धों को आधुनिकता बोध के साथ समन्वित किया है। फिर वह सम्बंध गुरु-शिष्य का हो, या भाई-भाई, धर्म या छल-प्रपंच का।

"दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,
रक्खो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे।"[3]

दिनकर ने 'रश्मिरथी' में राष्ट्रीय चेतना के साथ मानवतावाद की स्थापना का पुण्य प्रयास किया है। नियतिवाद का विरोध और कर्मवाद का जयघोष प्रस्तुत किया है। दिनकर 'ओज के कवि' भी मानें जाते हैं। ओज उनके प्रत्येक काव्य में कहीं न कहीं मुखर होकर दिखाई देता है।

"विधि ने था क्या लिखा भाग्य में यह खूब जानता हूँ मैं,
बाहों को कहीं भाग्य से बलि मानता हूँ मैं,
महाराज, उधम से विधि का अंक उलट जाता है,
किस्मत का पासा पौरुष से हार पलट जाता है।"[4]

अपने स्वस्थ, संतुलित एवं व्यापक दृष्टिकोण के कारण हम दिनकर को आज का सबसे अधिक प्रबुद्ध एवं युग-चेता कवि मान सकते हैं। दिनकर वस्तुतः किसी वाद के पक्षधर नहीं हैं।

"यदि उनकी कृतियों पर दृष्टि डालें तो 'रेणुका' का अतीत-गौरवगान, 'हुंकार' का वर्तमान, परिवेश के प्रति असंतोष, रसवंती' का रसवर्षी सौंदर्य, सामधेनी' की विश्वचेतना में नई काव्य धारा अपनाने की लालसा, कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' तथा 'उर्वशी' में वेद पुराणादि से सामग्री लेकर विचार-प्रस्थापन शैली आदि सभी को हम किसी एक वाद से नहीं बाँध सकते।"[5]

दिनकर की राष्ट्रीयता में अकर्मण्यता, भोगवाद, भागवाद, सामाजिक, आर्थिक असमानता सांप्रदायिकता और ब्राह्मणवाद का विरोध दिखाई देता है। दिनकर की काव्य में जितना कर्म